5.6 ग्रहणशील दृष्टिकोण (Eclectic Approach)

यह देखा गया है कि कोई भी सैद्धांतिक दृष्टिकोण मानव व्यवहार की व्याख्या निष्कर्ष रूप में नहीं करती। इसलिए एक ग्रहणशील दृष्टिकोण विकसित करना महत्वपूर्ण होता है, एक ऐसा दृष्टिकोण जिसकी विशेषता सिद्धांतों की अनेक व्यवस्थाओं का एक ठोस ज्ञान और सेवार्थी के संदर्भ में उपयोगी अवधारणाओं तथा तकनीकों का चयन करने की कुशलता होती है।

ग्रहणशीलता का अर्थ यह नहीं है कि सामाजिक कार्यकर्ता सतही तौर पर व्याख्या का एक विचारशास्त्र चुनता है। इसके स्थान पर ग्रहणशीलता का अर्थ किसी विशिष्ट सेवार्थी अथवा सेवार्थी के संदर्भों में उद्देश्यपूर्ण रूप से व्याख्या योग्य कारणों के साथ एक तरीका चुनना होता है। प्रत्येक विचारधारा की अपनी क्षमताएं और सीमाएं होती हैं। सामाजिक कार्यकर्ता का कौशल सेवार्थी के संबंध में कमियों की अवहेलना किए बिना क्षमताओं का लाभ उठाने में होता है।

संज्ञानात्मक सिद्धांत में कुछ बातें विचार के संबंध में सांझी होती है। और ये सेवार्थी के लिए उपयोगी होती है। जिसकी विचारधारा को सक्रिय किया जा सकता है। जिन सेवार्थीं के कुछ धार्मिक दर्शन होते हैं। वे अस्तित्व सिद्धांत से लाभांवित हो सकते हैं। सिद्धांतों को भली–भांति जानकर और सेवार्थी को पर्याप्त रूप से समझकर इन सिद्धांतों को उपयुक्त तथा प्रभावी रूप से उपयोग करना संभव है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी :नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

1) व्याख्या करें कि ग्रहणशील दृष्टिकोण (eclectic approach) को मानव व्यवहार को समझने का सर्वश्रेष्ठ तरीका क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

5.7 सारांश

वैयक्तिक कार्य सिद्धांत में बहुत विविधता होती है। इस विविधता से बौद्धिक वाद-विवाद, और विचारों के संघर्ष को प्रोत्साहित किया जाएगा। जिसका परिणाम अनेक सिद्धांतों के सामान्य पहलुओं और भौतिक उपयोगिता की विशेषता पर आधारित व्यवहार तथा अनुसंधान संबंधी प्रयासों के रूप में होगा।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- मैथ्युग्रेस (1992) : एन, इन्ट्रोडक्शन टू सोशल केस वर्क, टी.आई. एस. एस., बॉम्बे।
- बिस्टिक, एफ.पी. (1957), केस वर्क रिलेशनशिप, अनविन हेमन लिमिटेड, लंदन।
- हैमिलटन, जी. (1951), थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ सोशल केस वर्क, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रैस, न्यूयार्क।

- पर्लमैन, एच. (1957), सोशल केस वर्क : ए प्रोब्लम सोलविंग प्रोसेस, यूनीवर्सिटी ऑफ शिकांगो प्रेस, शिकांगो।
- स्किडमोर, आर. ए. ठाकरे, एम. जी. एंड फारले, ओ. एम, (1994), इन्ट्रोडक्शन टू सोशल वर्क, ईगलवुड क्लिफ्स : एन. जे. प्रेन्टिस हाल।
- फ्रैंक्स, सी. एम. (1964) (संपादक) : कंडीशनिंग टैक्नीक्स इन क्लिनिकल प्रैक्टिस एंड रिसर्च, न्यूयार्क : स्प्रिंगर।
- फ्रैडलैंडर, डब्ल्यू. ए. (1982), इन्ट्रोडक्शन टू वैलफेयर प्रैन्टिस हॉल ऑफ इंडिया : न्यू दिल्ली।
- डेविडसन, ई. एच. (1970), सोशल केस वर्क, विलियम्स एंड विलियम्स कम्पनी, बाल्टीमोर।
- यंगहस्बैंड, ई. (1971), न्यू डेवलपमैंटस इन केस वर्क, वोल्यूम प्प, लंडन : जोर्ज ऐलन एंड न्यूइन लिमिटेड।
- निकोलस, ई. (1963) : ए प्राइमर इन सोशल केस वर्क, न्यूयार्क : कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रैस।
- मेहेत्रास, वी. जी. (1979), सोशल केस वर्क इन इंडिया, अजमेर : सचिन पब्लिकेशन्स।
- बैनर्जी, गौरी रानी, केस वर्क, इन इनसाईक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क इन इंडिया, बाई देशमुख।
- मैथ्यू ग्रेस (1987), केस वर्क, इन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क इन इंडिया, मिनस्टिरी ऑफ सोशल वैलफेयर, गर्वनमेंट ऑफ इंडिया।
- राबर्टस, आर. डब्ल्यू, एंड नी आर. एच. (1970) : थ्योरीज ऑफ केस वर्क, शिकागो : द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस।
- उपाध्याय, आर. के. (2003), सोशल केस वर्क : ए थेराप्यूटिक एप्रोच जयपुर : रावत पब्लिकेशन्स।